RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल-011/2015-17

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष: 45, अंक : 32 एक प्रति 2 : रुपये

कुल पृष्ठ : 8

रविवार 10 नवम्बर , 2019

विक्रमी सम्वत् 2076, सृष्टि सम्वत् 1960853120

दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये

आजीवन शुल्क : 1000 रुपये

दूरभाष : 0181-2292926, 5062726

E-mail: apspunjab2010@gmail.com,

www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष-45, अंक : 32, 7-10 नवम्बर 2019 तदनुसार 25 कार्तिक, सम्वत् 2076 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

विश्व के जीवन! तेरी स्तुति करना चाहता हूँ

ले०-स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

स्तविष्यामि त्वामहं विश्वस्यामृत भोजन।
अग्ने त्रातारममृतं मियेध्य यजिष्ठं हव्यवाहन।।

-ऋ०१।४४।५

शब्दार्थ-हे **विश्वस्य+अमृत** = विश्व के जीवन! **भोजन** = भोगविधाता! हे **अग्ने** = सबको आगे ले-जाने वाले! हे **मियेध्य** = पवित्र करने वाले! **हव्यवाहन** = भोग्य पदार्थ प्राप्त कराने वाले! **त्वाम्** = तुझ **त्रातारम्** = रक्षक, **अमृतम्** = अविनाशी, **यजिष्ठः** = सबसे अधिक पूजनीय की **अहम्** = मैं **स्तविष्यामि** = स्तुति करना चाहता हूँ।

व्याख्या-आज मन में आया है, तेरी स्तुति करूँ। तूने ही प्रेरणा की कि मैं तेरी स्तुति करूँ। तेरा आदेश है-**'कविमग्निमुप स्तुहि सत्यधर्माणमध्वरे। देवममीवचातनम्।।'** [ऋ० १।१२।७]= यज्ञ में क्रान्तदर्शी, सबके उन्नायक, अटल नियमों वाले, दु:खनाशक भगवान् के पास बैठकर उसकी स्तुति कर। तेरे इस आदेश को शिरोधार्य कर मैं तेरी स्तुति करना चाहता हूँ। तू अग्नि है, ज्वाला है। मैं भी आग बनना चाहता हूँ। तेरा ही कथन है **अग्निनाग्निः समिध्यते** [ऋ० १।१२।६]-आग से आग जलती है। प्रभो! तू आग है, मुझे भी आग बना, चमका। प्रभो! तू विश्व का जीवन है, तेरे बिना यह जगत् समाप्त हो जाए, मर जाए। तू ही जीवन की सामग्री देता है। तू न हो तो सभी भूखे मर जाएँ, प्रभो! मैं काम-क्रोध-लोभ-मोह-मद-मत्सर के कारण अपवित्र हूँ, **तू मियेध्य=** है, पवित्र है। मैं पवित्र बनने के लिए तेरी स्तुति करता हूँ। अपना यह गुण मुझ में संक्रान्त कर। तू मियेध्य=पवित्रकार है। मेरे सब आवरण, मल दूर कर। मुझे विमल बना दे। भगवान्! तेरी शक्ति अनन्तपार है। तू गर्भस्थ को भोजन पहुँचाता है। तू ही सबको भोगसामग्री देता है। प्रभो! तू केवल हव्यवाहन ही नहीं है, तू तो देववाह भी है-**'स देवाँ एह वक्षति' [ऋ० १।१।२]** तू देवों को यहाँ लाता है, अत: हमारी प्रार्थना है-

स आ वह पुरुहूत प्रचेतसोऽग्ने देवाँ इह द्रवत् [ऋ० १।४४।७]= हे पुरुहूत! बड़ी पुकार वाले! तू शीघ्र ही उत्तम ज्ञानी देवों को यहाँ ले-आ। यहाँ कहाँ? प्रभो! **'देवाँ इहा वह। उप यज्ञं हविश्च नः'** [ऋ० १।१२।१०]= देवों को यहाँ हमारे यज्ञ और हवि के समीप ले-आ। प्रभो! तू त्राता है, अत: **'प्राविता भव' [ऋ० १।१२।८]**= उत्तम रीति से हमारी रक्षा कर। भगवान्! तू अमृत है। मैं तेरी स्तुति करता हूँ, क्योंकि **'स्तोता वो अमृतः स्यात्' [ऋ० १।३८।४]** तेरा स्तोता=स्तुति करने वाला अमृत हो जाता है। पूज्यतम! तू यजिष्ठ है, सबसे बड़ा याज्ञिक है। मैं भी यज्ञ करूँगा-**'यजाम देवान् यदि शक्नवाम' [ऋ० १।२७।१३]** हम यथाशक्ति देवयज्ञ करेंगे। प्रभो! मैं अज्ञानी हूँ। तेरी स्तुति की गति नहीं जानता, अत: तेरे बताये शब्दों से तेरा यशोगान मैंने किया है। अत: विनती है-**'इमं स्तोमं जुषस्व नः' [ऋ० १।१२।१२]**= हमारे इस स्तोत्र को स्वीकार कर। प्रभो! वास्तव में यह तेरी ही देन है। अत:-**'त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पये'**= ज्ञानदाता! तेरी वस्तु तुझे ही भेंट करता हूँ।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

त्वाꣳशुष्मिन् पुरुहूत वाजयन्तमुप ब्रुवे सहस्कृत।
स नो रास्व सुवीर्यम्।।

-उ० ४.२.१३.३

भावार्थ-हे महाबलिन् बलप्रदात:! हम आपके भक्त आपकी ही उपासना करते हैं, आप कृपा कर हमें आत्मिक बल दो, जिससे हम लोग, काम क्रोध आदि दु:खदायक शत्रुओं को जीत कर, आपकी शरण में आवें। आपकी शरण में आकर ही हम सुखी हो सकते हैं, आपकी शरण में आये बिना तो, न कभी कोई सुखी हुआ है और न होगा।

त्वं यविष्ठ दाशुषो नॄंः पाहि शृणुही गिरः।
रक्षा तोकमुत त्मना।।

-उ० ४.१.१८.३

भावार्थ-हे सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर! आप कृपा कर, दानशील धर्मात्माओं की और उनके पुत्र-पौत्रादि परिवार की रक्षा कीजिये। जिससे वे दाता धर्मात्मा परम प्रसन्न हुए, सुपात्रों को अनेक पदार्थों का दान देते हुए संसार का उपकार करें और आपकी कृपा के पात्र सच्चे प्रेमी भक्त बनकर दूसरों को भी प्रेमी भक्त बनाएँ।

इन्द्रमीशानमोजसाऽभि स्तोमैरनूषत।
सहस्रं यस्य रातय उत वा सन्ति भूयसीः।।

-उ० ५.१.२०.३

भावार्थ-जिस दयालु ईश्वर के दिये हुए शुद्ध वायु, जल, दुग्ध, फल, फूल, वस्त्र, अन्न आदि हज़ारों और लाखों पदार्थ हैं, जिन को हम निशि दिन उपभोग में ले रहे हैं, इसलिए हमें योग्य है कि उस परम पिता जगदीश की, पवित्र वेद के मन्त्रों से सदा स्तुति करें और उसी को अनेक धन्यवाद देवें, जिस से हमारा कल्याण हो।

व्रतमय जीवन

ले.-शिवनारायण उपाध्याय, कोटा

वेदों में व्रतमय जीवन व्यतीत करने को कहा गया है। आर्य लोग व्रती होते थे। उनका जीवन अनुकरणीय होता था। हम वेद के आधार पर व्रतमय जीवन पर विचार करते हैं। प्रत्येक परिवार का एक पुरोहित होता था जो परिवारजनों को धर्म-अधर्म, पाप-पुण्य, न्याय-अन्याय आदि को सूक्ष्म रूप में बतलाकर श्रेष्ठ जीवन जीने की कला सिखलाता था। ऋग्वेद का प्रथम मंत्र ही हमें यह बता रहा है कि हमारा पुरोहित अग्नि के समान हमारा पथ प्रदर्शन करने वाला हो। यजुर्वेद 1.5 में कहा गया है-

'अग्ने व्रतपते व्रतम् चरिष्यामि तच्छ केयं तन्मे राध्यताम्।
इदमहमनृतातसत्यमुपैमि।'

हे (व्रतपते) सत्य भाषणादि धर्मों के पालन करने वालों के स्वामी और (अग्ने) सत्योपदेशन करने वाले तेजस्वी परमात्मन्। मैं (अनृतात) सत्य से भिन्न झूठ (सत्यम्) वेद विद्या, प्रत्यक्ष आदि प्रमाण सृष्टि क्रम, विद्वानों का संग, श्रेष्ठ विचार तथा आत्मा की शुद्धि आदि प्रकारों से जो निर्भ्रम, सर्वहित तत्व अर्थात् सिद्धान्त के प्रकाश करने वालों से सिद्ध किया हुआ एवं अच्छी प्रकार परीक्षा किया गया (व्रतम्) सत्य बोलना, सत्य मानना और सत्य ही करना है इसका (उपैमि) नियम से ग्रहण करने की इच्छा करता हूँ। (मे) मेरे (तत्) इस सत्य व्रत को आप (राध्यताम्) अच्छी प्रकार सिद्ध कीजिये जिससे कि (अहम्) मैं उक्त सत्यव्रत के नियम करने को (शकेयम्) समर्थ होऊँ और मैं (इदम्) इसी प्रत्यक्ष सत्य ज्ञान के आचरण का नियम (चरिष्यामि) करूँगा।

फिर इसी सत्य व्रत के आचरण को बल प्रदान करने हेतु यजु. 2.28 में कहते हैं-

अग्ने व्रतपते व्रतमचारिषं तदशकं तन्मेऽराधीदमहंयऽएवा-ऽस्मिसोऽस्मि।'

हे (व्रतपते) व्रतों के स्वामी (अग्ने) सत्य स्वरूप परमेश्वर। आपने जो कृपा करके (मे) मेरे लिए (व्रत्) व्रत को (अराधि) अच्छी प्रकार सिद्ध किया है (तत्) उस सत्य नियम को (अशकम्) जिस प्रकार करने में मैं समर्थ होऊँ (अचारिषम्) अर्थात् उसका आचरण अच्छी प्रकार कर सकूँ। वैसा मुझको कीजिये। (य:) जो मैंने उत्तम अथवा अधर्म कर्म किया है (तदेवाहम्) उसी को भोगता हूँ। अब भी जो मैं जैसा करने वाला (अस्मि) हूँ वैसे कर्म के फल भोगने वाला (अस्मि) होता हूँ।

सत्य का व्यवहार जगत् में सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। इसीलिए तैत्तिरीय उपनिषद् में कहा गया है, 'सत्यान्न प्रमदितव्यम्' सत्य के बोलने में प्रमाद मत कर। 'सत्यम् वद' सत्य ही बोल। जो अपने दैनिक आचरण में ही सत्य का ग्रहण करते हैं वे समाज में सम्मान की दृष्टि से देखे जाते हैं। वैदिक धर्म में दान की भी बड़ी महत्ता है। व्यक्ति को प्रतिदिन निर्धन अपाहिज, अभावग्रस्त व्यक्ति को कुछ न कुछ सहायता करते ही रहना चाहिये। राष्ट्र एवं समाज के विकास में भी व्यक्ति का अंशदान होना चाहिये। तैत्तिरीय उपनिषद् में कहा गया है-

श्रद्धया देयम्। अश्रद्धया देयम्। श्रिया देयम्। ह्रिया देयम्। भिया देयम्। संविदा देयम्। तै.त्ति. उप.

अर्थात् समाज हित में श्रद्धापूर्वक दान देना चाहिए। श्रद्धा न हो तो अश्रद्धा से भी दान देना चाहिये। प्रसन्नता से अधिक वृद्धि होने पर दान देना चाहिए आर्थिक दृष्टि से सम्पत्ति में वृद्धि नहीं हुई हो तो भी समाज में सम्मान कम न हो अपने को लज्जित न होना पड़े यह सोचकर दान देना चाहिये समाज तथा राज्य के भय से भी दान देना चाहिये। यह सोचकर भी दान देना चाहिये कि इस दान के देने से आगे चल कर लाभ मिल सकता है।

'अमोतं वासो दद्याद्धिरण्यमपि दक्षिणाम्।
तथा लोकान्तसमाप्नोति ये दिव्या ये च पार्थिवा:।
अथर्व. 9.5.14'

अर्थ-यह (अमोतम्) ज्ञान के साथ बुना हुआ (वास:) वस्त्र और (हिरण्यम्) सुवर्ण (अपि) भी (दक्षिणाम्) दक्षिणा (दद्यात्) देवे। (तथा) उससे वह उन (लोकाम्) लोकों को (सम्) पूरा पूरा (आप्नोति) पाता है (ये) जो (दिव्या:) अन्तरिक्ष के (च) और (ये) जो (पार्थिवा:) पृथ्वी के हैं।

ऋग्वेद 8.45.15 में अदानी पुरूष की निन्दा की गयी है।

यस्ते देवां अदाशुरिः प्रममर्षि मघत्तये।
तस्य नो वेद आ भर।

अर्थ-हे इन्द्र। आप उस कृपण पुरूष का धन हमारे लिए ले आवें जो धार्मिक होकर भी आपके उद्देश्य से दीन दरिद्र मनुष्यों के मध्य कुछ नहीं देता अपितु धन दान करने के लिए अत्यन्त उदार पुरूषों की जो निन्दा किया करता है।

वैदिक विद्वान को सदैव मृदुभाषी ही होना चाहिये उसे ऐसा व्रत लेना चाहिए-

जिह्वाया अग्रे मधु में जिह्वा मूले मधुलकम्।
ममेदह व्रतावसो ममचित्त-मुपायसि। अथर्व. 1.34.2

अर्थ-(मे) मेरी (जिह्वाया) जिह्वा के (अग्रे) सिर पर (मधु) मधु का रस होवे। (जिह्वा मूले) जिह्वा के मूल में (मधुलकम्) मधु का स्वाद होवे। (मम) मेरे (क्रतौ) कर्म वा बुद्धि में (इत्) ही (अह) अवश्य (अस:) तू रह (ममचित्तम्) मेरे चित्त में (उपायसि) तू पहुँच करती है।

भय नाना पापों को जन्म देता है यह सोचकर आर्य पुरूष निडरता का व्रत लेते हैं। अथर्व. काण्ड सूक्त में इस विषय में 6 मंत्र आये हैं-

यथा भूतं च भव्यं न विभीतो न रिष्यत:।
एवा मे प्राण मा विभे:।
अथर्व. 2.15.8

अर्थ-जैसे निश्चय करके भूत काल और भविष्य काल न दु:ख देते और न डरते हैं वैसे ही मेरे प्राण तू मत डर। इसी प्रकार अथर्व. 19.15.6 में प्राणी मात्र से निडरता के साथ मित्रता के विषय में कहा गया है-

अभयं मित्रादभयंममित्रादभयं ज्ञातादभयं परोक्षात्।
अभयं नक्तमभयं दिवा न: सर्वा आशा ममित्रं भवन्तु।

अर्थ-हमें मित्र से भय न हो, शत्रु से भी भय न हो, जाने हुए पदार्थ से भय न हो, न जाने हुए पदार्थ से भी भय न हो। हमें रात्रि में भय न हो, हमें दिन में भय हो। सभी दिशाएं मेरे मित्र के समान हो जावें।

तैत्तिरीय उपनिषद् भृगु वल्ली में कुछ व्रत धारण करने को कहा गया है-

अन्नम् न निन्द्यात्। तद् व्रतम्। तै. उप. भृगु वल्ली अनुवाक सप्तम्।

अन्न की निन्दा न करे इसका व्रत कर ले।

अन्नं न परिचक्षीत्। तद् व्रतम्। तै. उप. भृगु वल्ली अनुवाक अष्टम्।

अन्न का अनादर नहीं करें यह व्रत लें।

अन्नम् बहु कुर्वीत। तद् व्रतम। भृगु वल्ली नवम अनुवाक अन्न को बहुत बढ़ाये-यह व्रत कर ले।

तैत्तिरीय उपनिषद् शिक्षाध्याय वल्ली में शिक्षा समाप्त होने पर समावर्तन संस्कार के अवसर पर आचार्य शिष्य से कुछ व्रत पालने का आदेश देता है-सत्यं वद। धर्म चर। स्वाध्यायान् मा प्रमद:।

सदैव सत्य बोलना। धर्माचरण करना। स्वाध्याय में प्रमाद मत करना।

'देवपितृ कार्याभ्यां न प्रमदितव्यम्। मातृ देवो भव। पितृ देवो भव। आचार्य देवो भय। अतिथि देवो भव।

यान्यनवद्यानि कर्माणि तानि सेवित ब्यानि नो इतराणि। यान्यस्माकं सुचारितानि तानि त्वयोपास्यानि नो इतराणि। तैत्ति. उप. 1.11.2

अर्थ-संसार में जो देव हैं, तुमसे गुणों में बढ़े चढ़े हैं और जो पितर हैं आयु में बड़े हैं, उनके प्रति अपने कर्तव्य में प्रमाद मत करना। माता को देवी मानना। पिता, आचार्य और अतिथि को देवता मानना। हमारे जो अनिन्दित कर्म हैं उन्हीं का सेवन करना दूसरों का नहीं, आर्यजन व्रत लेते थे कि वे सदैव भद्र आचरण ही करेंगे।

भद्रं कर्णेभि: श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्रा:।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांससस्तनुभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायु:। यजु. 25.21

(भद्र) कल्याण को ही (कर्णेभि:) कानों से (श्रृणुयाम) हम लोग सुनें।

(देवा:) हे परमात्मन्। (भद्रम्) मङ्गलमय को ही (पश्येम) हम सदा देखें। (अक्षभि:) आंखों से (यजत्रा:) हे यजनीयेश्वर। (स्थिरे:) दृढ़ (अङ्ग) अङ्ग-उपाङ्ग स (तुष्टुवांस) आपकी स्तुति और आपकी आज्ञा का अनुष्ठान करें (तनुभि:) आत्मा और शरीर सहित (व्यशेमहि) विविध सुख प्राप्त करे (देवाहितम्) इन्द्रिय और विद्वानों के हितकारक (यद्) जो (आयु:) आयु को।

आर्य जन सदैव शिव संकल्प के व्रत का धारण करने वाला होता है-

यज्जाग्रतो दूरमुदैति देव तदु सुप्तस्य तथैवैति।
दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मन: शिव संकल्पमस्तु।
यजु. 34.1

अर्थ-(यत्) जो (जाग्रत:) जागते हुए पुरूष का (दूरम्) दूर दूर (उदैति) जाता रहता है (देवम्) देव (आत्मा का साधक, मुख्य साधक,

(शेष पृष्ठ 6 पर)

सम्पादकीय

गोकरूणानिधि में गाय की महत्ता

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी गोकरूणानिधि नामक पुस्तक की भूमिका प्रारम्भ करते हुए लिखते हैं कि- वे धर्मात्मा विद्वान् लोग धन्य हैं, जो ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव, अभिप्राय, सृष्टि-क्रम, प्रत्यक्षादि प्रमाण और आप्तो के आचार से अविरूद्ध चल के सब संसार को सुख पहुँचाते हैं और शोक है उन पर जो कि इन से विरूद्ध स्वार्थी दयाहीन होकर जगत् में हानि करने के लिए वर्त्तमान हैं। पूजनीय जन वे हैं जो अपनी हानि होती हो तो भी सब के हित के करने में अपना तन, मन, धन लगाते हैं और तिरस्करणीय वे हैं जो अपने ही लाभ में सन्तुष्ट रहकर सब के सुखों का नाश करते हैं।

ऐसा सृष्टि में कौन मनुष्य होगा जो सुख और दु:ख को स्वयं न मानता है? क्या ऐसा कोई भी मनुष्य है कि जिसके गले को काटे वा रक्षा करे, वह सुख और दु:ख का अनुभव न करे? जब सब को लाभ और सुख ही में प्रसन्नता है तो बिना अपराध किसी प्राणी का प्राण-वियोग करके अपना पोषण करना यह सत्पुरूषों के सामने निन्दित कर्म क्यों न होवे? सर्वशक्तिमान जगदीश्वर इस सृष्टि में मनुष्यों के आत्माओं में अपनी दया और न्याय को प्रकाशित करे कि जिस से ये सब दया और न्याययुक्त होकर सर्वदा सर्वोपकारक काम करें और स्वार्थपन से पक्षपात युक्त होकर कृपापात्र गाय आदि पशुओं का विनाश न करें कि जिससे दुग्ध आदि पदार्थों और खेती आदि क्रियाओं की सिद्धि से युक्त होकर सब मनुष्य आनन्द में रहें। भारतीय संस्कृति और चिन्तन परम्परा में गौ को अत्यधिक पूजनीय माना गया है। जो गौओं को पालते हैं, उनकी रक्षा करते हैं उनको गाय **भूयो भूयो रयिमिदस्य वर्धयन्** गौधन उन गृहस्थों के ऐश्वर्यों की वृद्धि करता है। इसलिए वेद में स्पष्ट रूप से यह उद्घोषणा की गई है कि गौ माता, पुत्री और बहन के समान अघ्न्या है। ऋग्वेद का मन्त्र है-

माता रूद्राणां दुहिता वसूनाँ स्वसादित्यानाम् तस्यनाभि:।
प्र नु वाचं चिकितुषे जनायमागामानागामदितिं वधिष्ट।।

गौ राष्ट्र के रूद्र, वसु और आदित्य ब्रह्मचारियों की माता, पुत्री और बहिन है। ये अमृत हैं। ऐसी निष्पाप गौ को कभी मत मार। इसलिए गौ को वेद में रक्षा करने योग्य बतलाया है।

इमं साहस्रं शतधारमुत्संव्यच्यमानं शरीरस्य मध्ये।
घृतं दुहानामदितिं जनायाग्ने मा हिंसी: परमे व्योमन्।। यजु.

अर्थात् सैकड़ों तथा हजारों का धारण और पोषण करने वाली दूध का कुआं, मनुष्यों के लिए घृत देने वाली और जो न काटने योग्य गौ है उसकी हिंसा मत कर। महर्षि दयानन्द जी इसी मन्त्र पर भावार्थ में लिखते हैं- जिस गाय से दूध, घी आदि पदार्थ उत्पन्न होते हैं, जिनके द्वारा सभी का रक्षण होता है, ऐसी गौ कभी भी मारने योग्य नहीं है। जो गाय की हिंसा करे उसे राजा दण्ड़ दे। वेद में सभी पशुओं की रक्षा के लिए कहा है। अथर्ववेद में कहा गया है कि क्षत्रिय ब्राह्मण की गौ की रक्षा करे, उसकी हिंसा कभी न करे। गौ को अघ्न्या कहा है। कहने का अभिप्राय यह है कि गौ को कभी नहीं मारना चाहिए। निरूक्त में भी गौ के जो नाम दिए है वे हैं- अघ्न्या, उस्रा, उस्रिया, अही, मही, अदिति, जगती और शक्करी। इन शब्दों में अघ्न्या और अदिति शब्द गौ के अवध्य होने की तथा अही और मही शब्द उसके पूज्य होने की सूचना देते हैं। इसी प्रकार वेद में अनेकों स्थलों पर गौ को अघ्न्या कहा है। जो उसकी रक्षा करता है उसकी प्रशंसा वेद द्वारा की गई है। मारूतं गोषु अघ्न्यं शर्ध: प्रशंस: अर्थात् जो मारूत् गौ की रक्षा करते हैं उनके बल की रक्षा करो। इयं अघ्न्या अश्विभ्यां पय: दुहाम् अर्थात् यह अवध्य गौ अश्वि देवों के लिए दूध दे। अघ्न्ये विश्वदानीं तृणं अद्धि अर्थात् हे अवध्य गौ तू सदा घास खा। इसके अलावा और भी शास्त्रों के प्रमाण हैं जहां पर गाय को पूजा के योग्य बताया है। गावो विश्वस्य मातर: अर्थात् गाय सारे संसार की माता है।

दुर्भाग्य से लोग वेद के मार्ग को भूल गए, विद्या आदि से रहित हो गए, वाममार्ग का जोर हुआ उस समय मांस की आहुतियां यज्ञ में दी जाने लगी। वेद से अलग भारतीय साहित्य में भी गौ का महत्व बहुत दर्शाया गया है। जैसा कि महाभारत में वर्णन आया है कि-

यज्ञांगं कथिता गवो यज्ञ एव च वासव:।
एतामिश्च विना यज्ञो न वर्तेत कथंचन।।

भीष्म जी कहते हैं कि वासव: गौओं को यज्ञ का अंग तथा साक्षात् यज्ञस्वरूप कहा गया है। क्योंकि इन के दुग्ध, दधि और घृत के बिना यज्ञ सम्पन्न नहीं होता। महाभारत में भी गौवों को अमृत की खान कहा है। वास्तव में गौ सर्वश्रेष्ठ पशु है, फिर भी मनुष्य पता नहीं उसकी हिंसा क्यों करता है। ये गौवें विकार रहित अमृत धारण करती हैं और दुहने पर अमृत रूपी दूध हमें प्रदान करती हैं। सारा संसार उनके सामने नतमस्तक होता है।

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द जी जो उन्नीसवीं शताब्दी के महान् सुधारक हुए हैं वे गौओं के प्रति अपने उद्‌गार प्रकट करते हुए करूणास्रोत बहाते हुए गोकरूणानिधि नामक ग्रन्थ में कहते हैं- देखिए जो पशु नि:सार घास, तृण पत्ते, फल फूल आदि खाएं और सारा दूध आदि अमृत रत्न देवें, हल गाड़ी में चल के अनेकविध अन्नादि उत्पन्न करके नीरोगता करे, मित्र आदि के समान पुरूषों के साथ विश्वास और प्रेम करें, जिधर चलाए उधर चलें, अपने स्वामी की रक्षा के लिए तन लगावे इत्यादि शुभ गुणयुक्त सुखकारक पशुओं के गले छुरे से काट कर जो अपना पेट भरकर अपनी व संसार की हानि करते हैं, क्या संसार में उनसे अधिक कोई विश्वासघाती, अनुपकारी दु:ख देने वाले पापीजन होंगे? गोकरूणानिधि में महर्षि दयानन्द गौ का आर्थिक दृष्टि से लाभ गिनाते हुए लिखते हैं कि-एक गाय की पीढ़ी में छ: बछिया और सात बछड़े हुए इनमें से एक रोग आदि से मृत्यु सम्भव है तो भी बारह शेष रह जाते हैं। उन बछियों के दूध मात्र से १५४४४० व्यक्तियों का पालन हो सकता है। अब रहे छ: बैल उनमें एक जोड़ी से २०० मन अन्न उत्पन्न हो सकता है। इस प्रकार तीन जोड़ी ६०० मन अन्न उत्पन्न कर सकती है। प्रत्येक मनुष्य का तीन पाव भोजन गिने तो २५६००० मनुष्यों को एक बार भोजन होता है। इन गायों को परपीढ़ियों का हिसाब लगाकर देखा जाए तो असंख्य मनुष्यों का पालन हो सकता है और इसके मांस से अनुमान है कि अस्सी मासांहारी मनुष्य तृप्त हो सकते हैं।

भारतीय इतिहास में आर्य राजाओं के यहां तो गौ रक्षा होती ही थी। इतिहास प्रसिद्ध महाराजा दिलीप ने शेर के सामने अपने आपको गौ की रक्षा हेतु प्रस्तुत किया। तभी तो उस समय का भारत समस्त संसार का गुरू कहलाता था। मनु महाराज की यह घोषणा कि पृथ्वी के सभी मानव भारत में शिक्षा लेने आते थे। वह युग कितना सुन्दर रहा होगा, इसका कारण गौ का सात्विक दूध और गौ रक्षा का ही फल था। आज भारत में भी गौओं का मांस बेचकर खाया जा रहा है फिर भी दाने-दाने के लिए दूसरे देशों पर निर्भर है। महर्षि दयानन्द जी ने गोकरूणनिधि में ठीक ही कहा है कि गौ आदि पशुओं के नाश से राजा और प्रजा का भी नाश हो जाता है।

हमें अपनी संस्कृति का अवलोकन करना चाहिए कि हमारी संस्कृति में गाय को अघ्न्या कहा है, हमारे ऋषियों-मुनियों द्वारा आश्रमों में गायों का पालन किया जाता था। वैदिक संस्कृति में सर्वे भवन्तु सुखिन: को आदर्श माना जाता है। चाहे कोई पशु हो या मनुष्य सबके सुख के लिए कामना की जाती है। इसलिए हमारी संस्कृति में किसी प्रकार की भी हिंसा के लिए कोई स्थान नहीं है।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

यज्ञ का प्राण

ले.-महात्मा चैतन्यस्वामी, सुन्दर नगर (हिमाचल)

कहते हैं कि एक बार महाराजा जनक ने एक बहुत बड़े यज्ञ का आयोजन किया जिसमें दुनिया भर के आचार्यों, महात्माओं तथा विद्वानों को बुलाया। प्रवास आदि पर होने के कारण महामना उद्दालक जी को आमन्त्रण नहीं मिल पाया। वे धूप में बैठकर बड़े मजे से भूने हुए चने चबा रहे थे। जब उन्होंने बहुत से महात्माओं को राजभवन की ओर जाते हुए देखा तो उन्होंने उनसे पूछा कि आप लोग कहां जा रहे हैं। उनसे मुनि जी को मालूम हुआ कि महाराजा ने बहुत बड़े यज्ञ का आयोजन किया है। उद्दालक जी भी उन महात्माओं के साथ राजभवन की ओर चल दिए जब वे सभी यज्ञस्थली पर पहुंचे तो यज्ञ लगभग प्रारंभ होने ही जा रहा था। कहते हैं कि महर्षि उद्दालक जी ने यज्ञ के व्यवहारिक स्वरूप के सम्बन्ध में वहां बैठे हुए सभी विद्वानों से कुछ प्रश्न पूछे जिनमें से एक था कि यज्ञ का प्राण क्या है ? जब कोई भी विद्वान् इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सका तो यज्ञ कराने वाले ब्रह्मा आदि से भी महर्षि ने यही प्रश्न किए मगर जब वे भी इनका उत्तर नहीं पाए तो सभी ने अपना-अपना स्थान छोड़ दिया तथा महामुनि उद्दालक जी से ही प्रश्न का उत्तर देने का निवेदन किया।

इसका उत्तर महर्षि जी ने दिया- **'इदं न मम वै यज्ञस्य प्राणः।'** अर्थात् इदम् न मम की भावना को आत्मसात् करना ही यज्ञ के प्राण है। स्वयं को आहुत तो करना है मगर केवल अपने स्वार्थ के लिए नहीं बल्कि परोपकार के लिए। इदम् न मम का भाव है यह मेरे लिए नहीं। आहुत देने के बाद कहा जाता है **'इदम् न मम'** अर्थात् यह मेरे लिए नहीं है। तो किसके लिए है? अग्नि के लिए, समाज के लिए, देश के लिए तथा समूचे विश्व के लिए। यही भावना यज्ञ के प्राण है। यज्ञ में आहुति देने के बाद इदम् मम नहीं कहा जाता है बल्कि कहा जाता है-इदम् न मम। मम की भावना जहां है समझो वहां यज्ञ की भावना परवान नहीं चढ़ी। कहते हैं कि दो अक्षरों को जपने वाला मृत्यु को और तीन अक्षरों वाला अमरत्व को प्राप्त होता है। ये दो और तीन अक्षर हैं-इदं मम तथा इदं न मम। जो व्यक्ति केवल अपना ही हित देखता है, दूसरों के हित-अहित का उसे तनिक भी ध्यान नहीं होता है, ऐसा व्यक्ति जो सबकी उन्नति में अपनी उन्नति के महत्व को नहीं समझता है उसका नाश हो जाता है मगर इसके विपरीत जो धर्म और सत्य के आधार पर अन्य लोगों की उन्नति का भी चिन्तन करता है वह व्यक्ति उत्थान को प्राप्त होता है। हमारे इतिहास में ऐसे अनेकों ही उदाहरण भरे पड़े हैं। हम केवल रामायण तथा महाभारत के कुछ पात्रों की चर्चा करके इस बात को सिद्ध करना चाहते हैं। रावण, कंस तथा दुर्योधन आदि ऐसे ही पात्र हैं जो केवल मात्र अपना ही हित साधने की दिशा में प्रयास करते हैं। उनके लिए धर्म-अधर्म का या सत्य और असत्य का चिन्तन महत्वपूर्ण नहीं है बल्कि उनके सामने केवल और केवल मात्र अपना हित साधने का ही लक्ष्य था और इसी कारण ये अत्यधिक अंहकार में डूबे हुए थे। इसी अंहकार के कारण उन्हें उन्हीं के हित में कही गई बातें भी अच्छी नहीं लगती थी। लोगों ने बहुत समझाया मगर क्योंकि उनके मानस पटल पर तो मम का चश्मा लगा हुआ था। अपने हित के आगे उन्हें कुछ और सूझता ही नहीं था। सारा संसार जानता है कि अन्ततः इसी कुत्सित भावना के कारण उनका विनाश हो गया। अत्यधिक शक्तिशाली तथा वैभव से परिपूर्ण रावण ने कभी सोचा तक नहीं होगा कि उसका विनाश इस तरह से हो जाएगा। अंहकार तथा मम की भावना ने उसका कुलसहित नाश कर दिया। कंस की स्थिति भी ऐसी ही रही। उसके विनाश का कारण भी यह मम की भावना ही रही। दुर्योधन भी अंहकार और मम की भावना में आंकठ डूबा हुआ था। उसे उसके मां-बाप ने बहुत समझाया कि तुम यदि अपने हठ को छोड़कर पाण्डवों को उनका हिस्सा दे दो तो विनाशकारी युद्ध रूक सकता है मगर वह नहीं माना। विदुर ने समझाया, भीष्म पितामह ने समझाया मगर उसमें जरा सा भी परिवर्तन नहीं आया। श्री कृष्ण जैसे योगीराज ने यहां तक कहा कि दुर्योधन तुम अधिक नहीं तो कम से कम पांच गांव ही पाण्डवों को दे दो मगर दुर्योधन ने इस बात को मानने से भी मना करके यहां तक कह दिया कि केशव आप तो पांच गांवों की बात कर रहे हैं मगर मैं तो बिना युद्ध के सूई की नोक के बराबर भी भूमि नहीं दूंगा। परिणाम वही हुआ बारी-बारी से उसके बन्धु बान्धव मृत्यु का ग्रास बनते चले गए और अन्ततः वह स्वयं भी पछताता हुआ ही इस संसार से गया।

इसके विपरीत इदं न मम की भावना पर चलने वाले श्री रामचन्द्र जी तथा श्री कृष्ण जी सदा-सदा के लिए अमर हो गए। इन महापुरूषों का लक्ष्य स्वार्थ से परिपूर्ण नहीं था बल्कि उन्होंने जो कुछ भी किया समाज के सामूहिक हित को देखते हुए ही किया। यह बात इस बात से पता चलती है कि बाली को मारने के बाद श्री राम जी ने वहां का राज्य न तो स्वयं संभाला और न ही लक्ष्मण को वहां का राजा बनाया बल्कि सुग्रीव को ही राजसिंहासन पर बिठाया। रावण को समाप्त करने के बाद लंका का राज्य भी रावण के ही छोटे भाई विभीषण को सौंप दिया। इसी प्रकार कंस को मारकर श्री कृष्ण जी स्वयं राजा नहीं बनें बल्कि उसी राजा को राजगद्दी पर बिठाया जिसे कंस ने पद्च्युत किया था। यही नहीं महाभारत का युद्ध जितवाने के बाद भी स्वयं राजा नहीं बनें बल्कि युधिष्ठिर को राजसूय यज्ञ की प्रेरणा दी और अपने छोटे से राज्य को भी उन्हीं के अधीन कर दिया। क्योंकि इन लोगों के सामने समाज का सामूहिक हित था न कि केवल अपना हित। ये इदं न मम की भावना से परिपूर्ण थे इसलिए सारे संसार में अपना नाम अमर कर गए। महाराणा प्रताप जब बहुत ही निराश और हताश थे तो उस समय भामाशाह ने अपना सारा खजाना उनके चरणों में समर्पित करके उनमें नया जोश भरने का काम किया था क्योंकि उनके हृदय में भी मम की नहीं बल्कि इदं न मम की भावना थी। इससे भी थोड़ा पूर्व जाएं तो हमें इतिहास में इदं न मम की भावना का बहुत ही अद्भुत उदाहरण मिलता है। पन्नाधाई के बलिदान को भला कौन भूल सकता है जिसने राजकुमार उदय सिंह को शत्रु से बचाने के लिए अपने स्वयं के पुत्र को तलवार के घाट उतरवा दिया था। जहां भी मम की भावना आऐगी वहां पर विनाश अवश्य ही होगा। हम कल्पना करें कि हमारे क्रान्तिकारियों में यदि इदं न मम की भावना न होती तो वे भारत माता की बलिवेदी पर कदापि आहुत न होते और भारत कदापि स्वतन्त्र न हो पाता। पाकिस्तान ने कायरतापूर्ण कार्य करके कारगिल में घुसपैठ कर ली। हमारे सेना के उच्च पदाधिकारी सौरभ कालिया को पकड़ लिया तथा उसे कहा गया कि वह इसकी सूचना हैड आफिस को न दे, इसके बदले में उसे बड़ी से बड़ी रकम तथा सुरक्षा प्रदान की जाऐगी। यदि कालिया में थोड़ी देर के लिए भी मम की भावना आ जाती तो पाकिस्तानी दरिन्दे कहां तक घुस आते इसकी हम कल्पना तक नहीं कर सकते हैं मगर भारत माता के इस लाल ने पाकिस्तान के समस्त प्रलोभनों को ठुकरा कर उनके कब्जे में होने के बावजूद भी हैड-आफिस को कारगिल में हुई घुसपैठ की सूचना दे दी। भले ही उसे इसके लिए अपने अंग-अंग कटवाने पड़े। जब इस जांबाज बहादुर का शव आया तो वह उसके कटे हुए अंगों की गट्ठरी मात्र थी। यह है इदं न मम की भावना जो व्यक्ति को धार्मिकता से परिपूर्ण बनाती है तथा उसका लोक-परलोक संवारती है। इसी भावना में व्यक्ति का जहां अपना हित छिपा हुआ है वहीं समाज का सामूहिक हित भी नीहित है। इस प्रकार की **'इदम् न मम'** की भावना को प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को अपनी वृत्ति को उत्कृष्टता की ओर ले जाने की जरूरत है। वेद का एक सुप्रसिद्ध मन्त्र है-

कुर्वन्नेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।

एवं त्वयि नान्यथेतो न कर्म लिप्यते नरे।।(यजु०40-2)

वेद का स्पष्ट आदेश है कि व्यक्ति को सौ वर्ष तक निष्काम भाव से कर्म करते हुए ही जीवन व्यतीत करना चाहिए और इस प्रकार वह कर्म में लिप्त नहीं होता बल्कि कर्म-बन्धन से मुक्त हो जाता है। कर्म-बन्धन से मुक्त होने का और कोई भी मार्ग नहीं है। कुछ लोग कर्मक्षेत्र से पलायन करने को ही आध्यात्मिकता समझने की भूल करते हुए देखे गए हैं। कुछ लोग बेकार बैठने को ही कर्म-संन्यास की संज्ञा देते हुए देखे गए हैं। वास्तव

(शेष पृष्ठ 7 पर)

महर्षि के जन्म से आज तक की महत्वपूर्ण, ऐतिहासिक घटनाएँ

ले.-पं. खुशहाल चन्द्र आर्य C/o गोबिन्द राय आर्य एण्ड सन्ज़ १८० महात्मा गान्धी रोड़, (दो तल्ला) कोलकत्ता-700007

१. महर्षि दयानन्द का जन्म-महर्षि जी का जन्म 19वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में काठियावाड़ के मोरवी राज्य के अन्तर्गत टंकारा नामक स्थान में 12 फरवरी सन् 1825 (फाल्गुन कृष्णा दशमी सम्वत् 1881) के दिन कर्षण जी तिवाड़ी माता अमृतावैन औदीच्य ब्राह्मण के घर हुआ। पिता जी ने बेटे का नाम मूलशंकर रखा, जिनको प्यार से घर के कुछ लोग दयाल जी के नाम से भी पुकारते थे।

२. पहला स्वतन्त्रता संग्राम: भारत का पहला स्वतन्त्रता संग्राम 1857 में हुआ जिसको अंग्रेजों ने सैनिक विद्रोह के नाम से सम्बोधित किया, परन्तु वीर सावरकर के विचारोनुसार यह भारत का पहला स्वतन्त्रता संग्राम था जिसको साधु-सन्तों व सन्यासियों ने योजनावद्ध तरीके से बनाई थी, जिसमें स्वामी दयानन्द के सद्गुरू स्वामी विरजानन्द, स्वामी विरजानन्द के सद्गुरू स्वामी पूर्णानन्द आदि ने मुख्य रूप से भाग लिया और देश के अधिकतर राजाओं व नवाबों ने भाग लिया। जिनमें झांसी की रानी लक्ष्मी बाई, नानासाहब पेशवा, तात्यां टोपे, राव तोलाराम, राजा कुँअर, सिंह मुख्य थे। इस स्वतन्त्रता संगराम का समय 31 मई 1857 रखा गया था, परन्तु मंगल पाण्डे की जल्दबाजी से 29 मार्च 1857 में आरम्भ हो गया जिसके कारण यह असफल हो गया। इसके पीछे कारण यह था कि अंग्रेजों को पहले मालूम हो जानें से इस संग्राम को कुचलने का समय मिल गया।

३. महात्मा गान्धी का जन्म-महात्मा गांन्धी का जन्म पोरबन्दर (गुजरात) में 1869 में हुआ जिनका देश को आजादी दिलाने में सब से अधिक योगदान माना जाता है।

४. आर्य समाज की स्थापना-देश में बढ़ता हुआ अज्ञान, अन्धविश्वास व पाखण्ड को मिटाने के लिए देव दयानन्द ने भक्तजनों के कहने से 10 अप्रैल 1875 (चैत्र शुक्लपञ्चमी संवत् 1932) में गिरगाँव मोहल्ला डॉ. माणिकचन्द जी की वाटिका मुम्बई में स्थापित की। जिसने महर्षि जी की मृत्यु के बाद अन्धविश्वास को मिटाने तथा देश को आजादी दिलवाने में बहुत बढ़-चढ़ कर भाग लिया।

५. महर्षि जी की मृत्यु-महर्षि दयानन्द की मृत्यु नन्ही जान वैश्या के ज़हर में काँच पीस कर मिलाने से 30 अक्टुबर 1883 में अजमेर में हुई।

६. कांग्रेस की स्थापना-कांग्रेस जी स्थापना सन् 1885 में डॉ. हयूम ने प्रजा का सम्पर्क सरकार से बनता रहे इसलिए एक पुल का काम करने के लिए बनाई थी बाद में महात्मा गान्धी जी के नेतृत्व में सन् 1929 के कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में पूर्ण आजादी की प्राप्ति की घोषणा कर दी। इसी समय सन् 1885 में आर्य समाज कलकत्ता की स्थापना हुई।

७. D.A.V की स्थापना-लाला लाजपत राय, भाई परमानन्द, लाला हरदेव सहाय M.A आदि ने मिलकर सन् 1886 में लाहौर में की स्थापना की जिसके प्रथम हेडमास्टर महात्मा हंसराज जी बिना वेतन लिए हुए जिसके कारण D.A.V में पढ़े हुए विद्यार्थियों ने अन्धविश्वास को मिटाने तथा आजादी दिलाने के काम में बहुत अधिक सहयोग दिया जो विस्मरणीय है।

८. गुरूकुल काँगड़ी की स्थापना-गुरूकुल काँगड़ी की स्थापना स्वामी श्रद्धानन्द ने सन् 1902 में हरिद्वार में की जिसका मुख्य उद्देश्य विश्व में वेद प्रचार करना था।

९. वीर सावरकर ने विदेशी कपड़ों की होली जलाई-वीर सावर कर ने सन् 1897 में चापेकर बन्धुओं के बलिदान से प्रेरणा लेकर देश भक्ति का पाठ पढ़ा और 1905 में विदेशी कपड़ों की होली जलाई।

१०. इंग्लैण्ड में इण्डिया हाऊस की स्थापना-श्याम कृष्ण वर्मा जो महर्षि दयानन्द का पक्का शिष्य था, उन्हीं की प्रेरणा से वर्मा जी इंग्लैण्ड गये और 1906 में इण्डिया हाऊस की स्थापना की जिसमें भारत के क्रान्तिकारियों के रहने की पूरी व्यवस्था थी जिसमें लाला लाजपतराय, भाई परमानन्द जैसे क्रान्तिकारियों ने काफी काम किया। यहीं रह कर वीर मदन लाल धींगड़ा ने कर्जन वायली का वध किया जो भारत के क्रान्तिकारियों को सजा दिलाने में बड़ा सहयोग करता था। वर्मा जी 1907 में वीर सावरकर को इसकी जिम्मेवारी दे कर स्वयं फ्रान्स चले गये।

११. आर्य समाज बड़ा बाजार-आर्य समाज बड़ा बाजार की स्थापना सन् 1906 में हुई।

१२. सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना-स्वामी श्रद्धानन्द व महात्मा नारायण स्वामी ने सब आर्य समाजों को जोड़ने के लिए 1909 में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना की पर दु:ख की बात है कि इस समय इसके तीन भाग बने हुए है जिससे आर्य समाज लड़ाई झगड़े का दगंल बना हुआ है।

१३. लार्ड हार्डिंग की सवारी पर बम फेंका गया-सन् 1912 में लार्ड हार्डिंग दिल्ली के नये वायसराय बन कर आये। इससे पहले वायसराय कलकत्ता ही रहते थे। इसलिए 23 दिसम्बर 1912 को बड़ी धूमधाम से भारी सुरक्षा के बीच लार्ड हार्डिंग का जुलूस निकाला गया। जुलूस जब चान्दनी चौक से निकल रहा था तो कहीं से बम आकर फूटा जिससे वायसराय तो बाल-बाल बच गया परन्तु इसका एक अंगरक्षक मारा गया। यह बम एक योजना के तहत वीर क्रान्तिकारी रासबिहारी बोस ने बसन्तकुमार विश्वास से फिकवाया था। इस काण्ड से सरकार बहुत सचेत हो गई और बहुत कड़ी कारवाई की जिससे चार महान् क्रान्तिकारी (१) मास्टर अमीचन्द (२) भाई बालमुकुन्द (३) अवध बिहारी व (४) बसन्त कुमार विश्वास को फाँसी हुई। रास बिहारी बोस किसी प्रकार से बच गया और वह 1915 में भारत छोड़ जापान चला गया और वही बस गया।

१४. प्रथम विश्वयुद्ध-अमेरिका और इंग्लैण्ड एक तरफ तथा दूसरी तरफ जर्मनी, जापान और इटली के बीच 28 जुलाई 1914 से 11 नवम्बर 1918 तक प्रथम विश्व युद्ध हुआ जिसमें एटम बम के प्रयोग से अमेरिका और इंग्लैण्ड की विजय हुई।

१५. जलियांवाला बाग का काण्ड-जलियांवाला बाग का काण्ड 13 अप्रैल 1919 में हुआ था। उस दिन बैसाखी का त्यौहार था और इन दिनों आजादी लेने की हवा बड़ी तेज़ी से चल रही था। जलियां वाले बाग में काँग्रेस के दो नेता सत्यपाल व सैफूद्दीन किचलू वैसाखी त्यौहार के दिन आजादी प्राप्ति के लिए व्याख्यान दे रहे थे। हजारों की संख्या में देशभक्त लोग इकट्ठे हो रहे थे तभी जनरलडायर ने निर्दोष निहत्थों पर गोली चलवा दी जिसमें हजारों की संख्या में लोग मारे गये और घायल हो गये। सरदार उधम सिंह इस काण्ड को देखने वाला था, उसने उसी दिन यह प्रतिज्ञा की थी कि मैं जनरलडायर को मारूँगा। उसको कोशिश करते-करते 21 वर्ष निकल गये और सन् 1940 में उसने इंग्लैण्ड में मारवेल डायर को मारा जिसने जनरलडायर को गोली चलवाने का आदेश दिया था और जो पंजाब का गवर्नर था। तब तक जनरलडायर मर चुका था। इस प्रकार उधम सिंह ने अपनी प्रतिज्ञा को 21 वर्ष बाद पूरा किया। यह काण्ड अमृतसर में हुआ था।

१६. काँग्रेस का अधिवेशन-सन् 1919 में काँग्रेस का अधिवेशन अमृतसर में होने वाला था लेकिन जलियांवाला काण्ड के कारण अमृतसर की हालत बहुत खराब थी इसलिए अधिवेशन करने की किसी की हिम्मत नहीं थी। ऐसे समय में स्वामी श्रद्धानन्द ने यह जिम्मेवारी ली और स्वागतध्यक्ष बन कर अधिवेशन को पूर्ण सफल बनाया जिससे स्वामी श्रद्धानन्द का यश चारों ओर बहुत बढ़ गया।

१७. महात्मागान्धी का असहयोग आन्दोलन-महात्मा गान्धी ने 1920 में असहयोग आन्दोलन आरम्भ किया जिसमें विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया गया और स्वदेशी वस्तुओं को अपनाने का नारा दिया गया। जो काफी सफल, परन्तु 13 मार्च 1922 में गान्धी जी को गिरफ्तार कर कर लिया गया जिससे आन्दोलन ठण्डा पर गया। फिर 31 दिसम्बर 1929 में लाहौर के आर्यजनों पूर्ण स्वराज्य लेने की घोषणा की।

त्यागमूर्ति लाला गंगाराम जी का जन्मोत्सव

आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर जालन्धर में प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी मेघ जाति को सर्वप्रथम शिक्षा का नेत्र प्रदान करने वाले लाला गंगाराम जी एडवोकेट का जन्मदिवस 11 नवम्बर 2019 से 17 नवम्बर 2019 रविवार तक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर महात्मा विशोकायति जी तथा श्री विजय कुमार शास्त्री जी के प्रवचन होंगे तथा श्री सुरेन्द्र आर्य जी के मधुर भजन होंगे। 11 से 16 नवम्बर तक रात्रि 7:30 से 10:00 बजे तक वेद कथा एवं प्रवचन होंगे। वैदिक चेतना मार्च 16 नवम्बर को प्रात: 9:00 से 10:00 बजे तक निकाला जाएगा। मुख्य कार्यक्रम 17 नवम्बर दिन रविवार को होगा। प्रात: 9:00 से 10:00 बजे तक यज्ञ किया जाएगा। 10:00 से 2:00 बजे तक श्रद्धांजलि समारोह होगा। आप सभी सपरिवार एवं इष्टमित्रों सहित समारोह में सम्मिलित होकर लाला जी के चरणों में श्रद्धासुमन अर्पित करें तथा आए हुए विद्वानों के सत्संग का लाभ उठाएं।

-कमल किशोर प्रधान आर्य समाज भार्गव नगर

पृष्ठ 2 का शेष-व्रतमय जीवन

भूत भविष्यत से और वर्तमान काल का ज्ञाता है) (तद्) वह मन (उ) निश्चय से (सुप्तस्य) सोते हुए पुरूष का (तथैव) वैसे ही (एति) जाता आता है (दूरङ्गमम्) दूर जाने का जिसका स्वभाव ही है (ज्योतिषाम्) अग्नि, सूर्यादि श्रोत्रादि इन्द्रिय इन ज्योति प्रकाशकों का भी (ज्योति:) प्रकाशक है (एकम्) एक बड़ा चंचल वेग वाला (तत्) वह (मे) मेरा (मन:) मन (शिवसंकल्पम्) शिवसंकल्पवाला (अस्तु) होवे। वैदिक विद्वान व्रत लेता है कि वह अपने परिश्रम से प्राप्त धन से ही सन्तुष्ट रहेगा किसी दूसरे का धन का लालच नहीं करेगा।

'तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा गृध: कस्य स्विद्धनम्। यजु. 40.1.

उस परम पिता परमेश्वर के द्वारा दिये गये पदार्थों का भोग कर किसी दूसरे के धन का लालच मत कर, यह सम्पूर्ण धन तो उस सुख स्वरूप परमेश्वर का ही है।

आर्य जनों को वेदानुसार सप्त मर्यादाओं के पालन का व्रत लेना ही होता है।

सप्त मर्यादा: कवयस्तत-क्षुस्तासामे का मिभ्यंहुरोगात्।
आयोहं स्कमभ उपमस्य नीडे पथां विसर्गे धरूणेषु तस्थौ।
ऋ. 10.5.6.

अर्थात् हिंसा, चोरी, व्यभिचार, मद्यपान, असत्यभाषण, जुआ और इन पापों के करने वालों का सहयोग करना सप्त मर्यादाओं का उल्लंघन करना है। जो इनमें से एक भी पाप करता है वह पापी होता है। वेद पवित्रता का संदेश देता है तथा अपने धर्म पर श्रद्धा भी रखने को कहता है-

द्रुपदादिव मुमुचन: स्विन्न: स्नातो मलादिव।
पूतं पवित्रेगेवाज्य माप: शुन्धन्तु मैनस:। यजु. 20.20
पुनन्तु मा देवजना: पुनन्तु मनसा धिय:।
पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेद:पुनीहि मा। यजु. 19.39

अर्थात् जैसे वृक्ष से सूखे पत्ते गिर जाते हैं जैसे पसीना निकलता हुआ आदमी स्नान से मल को धो डालता है। जैसे धी से पवित्रता होती है, उसी प्रकार हे जल, मेरे शरीर, वस्त्र और घर के नलों को शुद्ध कर दें। मुझे विद्वान लोग पवित्र करें। मेरा मन बुद्धि भी पवित्र करे। संसार के समस्त प्राणी मुझे पवित्र करें और यह अग्नि मुझे पवित्र करे। अपनी संस्कृति और सभ्यता पर हमें श्रद्धा रखने का व्रत लेता चाहिए-

श्रद्धा प्रातर्हवामहे श्रद्धा माध्यन्दिनं परि।
श्रद्धा सूर्यस्य विशुचि श्रद्धे श्रद्धापयेह न:। ऋ. 10.151.5

मैं प्रात काल श्रद्धा की पूजा करता हूँ। मैं मध्यदिन में श्रद्धा की पूजा करता हूँ और मैं सूर्य छिप जाने पर श्रद्धा की पूजा करता हूँ। इसलिए हे श्रद्धा। तू श्रद्धा के लिए आ।

ऋषि निर्वाण दिवस

आज दिनांक 27-10-2019 (रविवार) को दीपावली के दिन आर्य समाज मन्दिर कमालपुर होशियारपुर में ऋषि निर्वाण दिवस बड़ी ही श्रद्धा के साथ मनाया गया। इस अवसर पर विशेष हवन यज्ञ का आयोजन किया गया। श्री अश्वनि कुमार शर्मा और श्री कुलदीप आहलुवालिया ने यजमान पद को ग्रहण किया। नगर से पधारे आर्यजनों और उपस्थित मान्य सदस्यों का सभासदों ने बढ़ चढ़ कर आहुतियां डाली। तत्पश्चात् ''दयानन्द हाल'' में कार्यक्रम चला, मंच का संचालन करते हुए प्रो. यशपाल वालिया ने महर्षि स्वामी दयानन्द को नमन किया और उनके जीवन और अन्तिम क्षणों पर प्रकाश डाला। ऋषि दयानन्द धर्म और देश के बारे सदैव चिन्तित रहे, संसार से विदा लेते हुए अपने पीछे लाखों अनुयाई छोड़ गये, गुरूदत्त विद्यार्थी सरीखे नास्तिक आस्तिक बन गये। श्रीमती दुर्गेश नन्दिनी आर्य ने एक सुन्दर भजन के माध्यम से ऋषि दयानन्द का गुणगान किया।

प्रो. कैलाश चन्द्र शर्मा ने ऋषि दयानन्द कृत अमर ग्रन्थ ''सत्यार्थ प्रकाश के अन्तिम पन्नों पर अंकित ऋषि के मानव मात्र के लिए संदेश पर प्रकाश डाला और कहा कि ऋषि दयानन्द का आगमन और संसार छोड़ जाना एक अभूतपूर्व घटना है। अंत में प्रो. डा. प्रेम नाथ जी चोपड़ा ने अपने मुख्य उदबोधन में कहा कि ऋषि दयानन्द ने गुरु बिरजानन्द जी को दिया अपना वचन निभाते हुए अपनी वाणी और लेखनी से लाखों हृदयों को जोड़ा और आर्य समाज को एक प्रेरणा स्त्रोत के रूप में उजागर किया। उन्होंने उपस्थित डी. ऐ. वी. स्कूल के विद्यार्थियों और आर्य वीर दल के सदस्यों को पुस्तक ''व्यवहार भानु'' बांटी और उन्हें ऋषि के जीवन से सीख लेने की प्रेरणा दी। मंच से मुख्य उदबोधन कर्ता का धन्यवाद किया गया, शान्ति पाठ के पश्चात् सभी उपस्थित आर्यजनों ने ऋषि प्रसाद का रसावादन किया।

-प्रो. ऐन. के. शर्मा प्रधान

आर्य समाज गान्धी नगर-1 में ऋषि निर्वाणोत्सव एवं दीपावली पर्व मनाया

आर्य समाज गान्धी नगर-1 में 28 अक्तूबर दिन रविवार को ऋषि निर्वाणोत्सव मनाया गया सबसे पहिले आर्य समाज के मन्त्री एवम् पंडित श्री अनिल जी द्वारा हवन यज्ञ सम्पन्न कराया गया जिसमें श्री धर्मपाल जी मुख्य यजमान बने, यज्ञ के पश्चात पंडित अनिल जी ने ऋषिनिर्वाण पर अपने विचार रखें कि आर्य समाज दीपावली पर्व को ऋषिनिर्वाणोत्सव के रूप में क्यों मनाता है क्योंकि इसी दिन 30 अक्तूबर 1883 को जब ऋषि दयानन्द जी का सारा शरीर विष से भर चुका था और सारा शरीर बहुत कमजोर हो गया था और सांय काल का समय था तो ऋषि ने अपने प्राण यह शब्द कह कर त्याग दिए कि हे ईश्वर तेरी इच्छापूर्ण हो, तूने कैसी लीला की है।

ऋषि ने अपने जीवन काल में अन्धविश्वासों से दूर रहने को कहा सबसे पहिले नारी शक्ति का सम्मान करो और वेद के अनुसार जीवन चलाओ संसार में सभी एक पिता के पुत्र है, कोई छोटा बड़ा नहीं है।

तत्पश्चात सोनिया पल्लवी और उपलीशा ने और आशुमन ने ऋषि दयानन्द के भजन गाए।

1. 'जय बोलो, जय बोलो दयानन्द ऋषि की जय बोलो'

2. दयानन्द वेदों वाले बाल ब्रह्मचारी वे पै गईयां ने लोड़ां मुड़के आजा इक बारी फिर पं. अनिल और तिलकराज ने ''आज दुनियाँ तो मुख मोड़ के, ऋषि तुर गया, दिल तोड़ के'' भजन गया इस अवसर पर अशोककुमार जी धर्मपाल तिलकराज, राजपाल, चन्द्र भूषण, कस्तूरी लाल, श्रीमति कृष्णादेवी, लीला देवी, राजरानी, पं. प्रिंस की माता, एवं अन्य उपस्थित थी अन्त में शान्तिपाठ के साथ, प्रसाद वितरण किया। **-राजपाल, प्रधान उप. स. गान्धी नगर-1**

ऋषि निर्वाण दिवस

आर्य समाज मन्दिर तलवाड़ा में ऋषि निर्वाणा दिवस बड़ी श्रद्धापूर्वक मनाया गया प्रात: साढ़े आठ बजे पहले वैदिक सन्ध्या का पाठ किया पश्चात् वृहद् यज्ञ हुआ जिस में समाज के सदस्य उपस्थित हुए यज्ञ पण्डित परमानन्द आर्य ने कराया हवन यज्ञ के पश्चात् भजनों का कार्यक्रम हुआ जिस में कृष्णा देवी और अरूण कुमार वेदालंकार जी ने ऋषिदयानन्द जी के जीवन पर भजन गाये भजनों के पश्चात् परमानन्द जी ने ऋषि दयानन्द जी के जीवन पर प्रवचन दिया और बताया कि महाभारत के पश्चात् महर्षि दयानन्द जी ने ऋषि परम्परा को आगे बढ़ाया महर्षि जैमिनी के पश्चात् स्वामी जी ने ही वेदों और शास्त्रों को सारी दुनियां में फैलाया स्वामी जी अकेले थे और सारा संसार एक तरफ था सारे संसार के सामने अकेले खड़े हो गये। सभी मत वालों को शास्त्रार्थ का काम आगे भी चलता रहे इस के लिए उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की सारे जीवन में कितने की कष्ट सहे जहर पिये पत्थर खाये और अन्त में जहर खा कर लोगों को अमृत पिला कर संसार से परमेश्वर की ओर चले गये।

-पुरोहित परमानन्द आर्य

ऋषि निर्वाण दिवस मनाया

आर्य समाज मन्दिर शास्त्री नगर, जालन्धर में दीपावली पर्व एवं ऋषि निर्वाण दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। मुख्य यजमान स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, मुम्बई के C.A श्री कौशिल जी पत्नी सहित पधारे। श्री दास महेश जैरथ जी ने प्रभु भक्ति के भजन गा कर सब को निहाल किया इस अवसर पर प्रिं. भारद्वाज जी, प्रिं. हांडा जी, मा. मोहन जी उपस्थित थे। शान्ति पाठ के बाद प्रशाद वितरित किया गया एवं रात को दीपमाला की गई। **-भारतभूषण नन्दा प्रधान**

पृष्ठ 4 का शेष-यज्ञ का प्राण

में ऐसे लोग न तो आध्यात्म को और न ही कर्म के रहस्य को समझने का प्रयास, करते हैं। गीता में कहा गया है-

न हि कश्चिदक्षणमपि जातु तिष्ठित्य कर्म कृत्।

कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः।।(गी०3-5)

अर्थात् कोई व्यक्ति एक क्षण भर के लिए भी बिना कर्म के नहीं रह सकता है, क्योंकि व्यक्ति अपनी प्रकृति के स्वाभावानुसार कोई न कोई कर्म करता ही रहता है। इसलिए अपनी प्रकृति अर्थात् स्वभाव को बदलने की जरूरत है। कर्म से तो छुटकारा मिल नहीं सकता इसलिए अपनी प्रकृति को ही सुकर्मों की ओर दिशा देने की जरूरत है। वेद में जिस विद्या व अविद्या की चर्चा की गई है उनके भावों को आत्मना समझकर जीवन को सार्थकता प्रदान करनी चाहिए। वेद के अनुकूल कर्म करना ही धर्म है और वेद के विपरीत कर्म करना ही पाप है मगर मूढ़ व्यक्ति वेद विरूद्ध कार्यों को न केवल करता है बल्कि उनके पक्ष में कुतर्क भी प्रस्तुत करता है। ऐसे ही व्यक्ति के बारे में किसी विद्वान् ने कहा है-

एषां न विद्या न तपो न दानं ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।

ते मर्त्य लोके भुविभार भूता मनुष्य रूपेण मृगाश्चरन्ति।

अर्थात् जिस व्यक्ति के पास न तो विद्या है, न तप है, न दान देता है, न ज्ञानवान् है, चरित्रवान् भी नहीं है, जिसमें कोई भी गुण नहीं, धर्म के नियमों का अनुकरण नहीं करता है। ऐसा व्यक्ति तो इस धरती पर मानों भार स्वरूप ही है। उसका वेश भले ही मानव का हो मगर वह निरा पशु ही है।

उपरोक्त वेद मन्त्र भी कह रहा है कि यज्ञमयी-भावना से किए गए कर्म ही निष्काम-कर्म होते हैं जिनसे हम कर्म-बन्धन में नहीं बन्धते हैं। इसलिए निरन्तर यज्ञमयी भावना से सुकर्म में लगे रहने में ही जीवन की सार्थकता है। कर्म से पलायन करने वाला व्यक्ति कभी किसी प्रकार की सिद्धि को प्राप्त नहीं हो सकता है। कर्म की सीढ़ियां चढ़ते-चढ़ते ही व्यक्ति निरूद्ध-अवस्था को प्राप्त करने में समर्थ हो सकता है। जो व्यक्ति कर्म के रहस्य को नहीं समझ पाता है वह कभी भी जीवन में उन्नति नहीं कर सकता है और जो व्यक्ति कर्म के रहस्य को समझ जाएगा उसे उन्नति करने से कोई नहीं रोक सकता है। वेद कह रहा है-'**कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजी-विशेच्छतं समाः**'-तुम कर्म करते हुए ही सौ वर्ष जीने की आंकाक्षा करो।'**एवंत्वयि नान्य थेतोऽस्ति**'-तुम्हारे लिए इसके सिवा कोई दूसरा मार्ग नहीं है।'**न कर्म लिप्यते नरे।**' इस प्रकार कर्म रहस्य की गहराई को समझोगे तो तुम यज्ञमयी जीवन जीकर कर्म में लिप्त नहीं होंगे। श्री कृष्ण जी गीता में कहते हैं-'**अंहकारविमूढ़ात्मा कर्ताऽहमिति मन्यते (3-27)** अर्थात् अहंकार जन्य विमूढ़ व्यक्ति स्वयं को ही कर्ता मान लेता है। कर्म इतने समर्थ नहीं कि वे व्यक्ति को बान्ध सकें। वास्तव में 'मैंने किया' इस अहंकार के कारण ही व्यक्ति कर्मों के साथ बन्ध जाता है। इसी कारण वह सकाम कर्मों में फंस जाता है। कर्म की निष्कामता के लिए अपने चित की अवस्था पर विशेष ध्यान देना होगा। एकाग्र और निरूद्ध व्यक्ति निष्काम कर्म ही करेगा। वह कर्मों से भागेगा नहीं। कर्मों से व्यक्ति भाग भी नहीं सकता है। कर्म करना तो एक मजबूरी है। बिना कर्म किये तो हम रह ही नहीं सकते है। कर्म तो सौ वर्ष अर्थात् आयु पर्यन्त हमने करने ही हैं। मगर कर्मों को निष्कामता की ओर ले जाने के लिए अपनी वृतियों को उच्चावस्था तक ले जाने की जरूरत है। जो श्री कृष्ण जी के समान स्थितप्रज्ञ हैं, जो महर्षि दयानन्द के समान निरूद्ध हैं-उन्हें भला कर्म कैसे बान्ध सकते हैं? ऐसे महापुरूष कर्म करते हुए भी अलिप्त रहते हैं, क्योंकि उन्होंने कर्त्तापन अर्थात् अंहकार की जड़ को ही समाप्त कर दिया होता है। वे जो कुछ भी करते है, परमात्मा के प्रति समर्पित होकर ही करते हैं। साधारण लोगों को लगता है कि ये लिप्त हैं मगर उनकी स्थिति अलिप्त होती हैं। उनका जीवन तो मानों इस बात को चरितार्थ कर रहा होता है-

आदमी को चाहिए दुनियां में रहना किस तरह?

जिस तरह तालाब के जल में रहता है कमल।

श्री कृष्ण जी ने ऐसे कर्मयोगियों के बारे में ही कहा है-(गी०3-25) हे अर्जुन! जिस प्रकार अज्ञानी लोग कर्म में आसक्त हुए सब काम करते हैं, उसी प्रकार ज्ञानी व्यक्ति को चाहिए कि लोकसंग्रह (परोपकार व यज्ञ की भावना) हेतु कर्म में आसक्त होकर कर्म करे। आम लोगों को भले ही गीता का यह उपदेश समझ में न आए मगर इसमें बहुत बड़ा रहस्य छुपा हुआ है। वास्तव में सभी महापुरुषों के जीवन इसी का कार्यन्वयन करते हुए दिखाई देते हैं। वे लोगों को कर्मों में बन्धे हुए लगते हैं मगर उनके लिए कर्म बन्धन का नहीं बल्कि मुक्ति का साधन होता है। यदि हम थोड़ा सा भी मनन चिन्तन करें तो यह रहस्य हमारी समझ में आ सकता है। यही कर्म की अलिप्तता का सन्देश गीता में दिया गया है। कर्मबन्धन में न पड़ने का रहस्य वहां बड़े ही मनोवैज्ञानिक ढंग से समझाया गया है-

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽ-स्त्वकर्मणि।।(गी०2-47)

कर्मण्येवाधिकारस्ते-तुम्हारा कर्म में ही अधिकार है। **मा फलेषु कदाचन**-फल में कभी नहीं। कितना सुन्दर और व्यवहारिक उपदेश दिया गया है। महर्षि दयानन्द जी कहते हैं-व्यक्ति कर्म करने में स्वतन्त्र है लेकिन उसका फल भोगने में परतन्त्र है। यही बात गीताकार कह रहा है कि व्यक्ति का अधिकार अर्थात् उसकी स्वतन्त्रता कर्म करने तक तो है मगर उसका फल उसके अपने हाथ में नहीं है। फल तो उसे परमात्मा की न्याय-व्यवस्था के अनुसार ही मिलेगा। खुदा जैसा चाहे वैसा ही व्यक्ति को बना दे या हाथ की लकीरों में जो लिखा है वही होना है आदि अनेक प्रकार की बातें तो व्यक्ति को घोर भाग्यवादी बना देती हैं इससे बचकर व्यक्ति को यह बात गहराई से जान लेनी चाहिए कि हम कर्म करने में स्वतन्त्र हैं। विपरीत परिस्थितियों में भी व्यक्ति अपने आदर्श और कर्म को न छोड़े। इन्हीं कर्मों का फल आपको परमात्मा देगा। वह अपनी ओर से कोई मिलावट नहीं कर सकता है क्योंकि वह न्यायकारी है। एक विद्यार्थी को परीक्षा में तीन घण्टे का समय दिया जाता है। अब उस समय में वह स्वतन्त्र है कि वह उस समय का सदुपयोग करे या दुरूपयोग मगर फल पर उसका कोई अधिकार नहीं है। वह तो नियमानुसार ही मिलेगा। इसीलिए अगली बात कही गई है-**मा कर्मफल हेतुर्भुः** अर्थात् तू कर्म के फल का हेतु भी न हो। साथ ही कह दिया गया-**मा ते संगोऽस्त्वकर्माणि** अर्थात् उस किए गए कर्म के प्रति तू आसक्त भी मत हो। जब व्यक्ति कर्म तक ही अपना अधिकार समझेगा तो वह कर्म फल का हेतु भी स्वयं को नहीं मानेगा। इस प्रकार से स्वतः ही निष्कामता उसके जीवन का अंग बन जाएगी। काजल की कोठरी में डूबकर भी बिना कालिमा के निकलने का सूत्र गीता में प्रस्तुत किया गया है। श्री कृष्ण जी ने गीता में यज्ञ को निष्काम-कर्म का ही पर्याय माना है। उनके अनुसार यह इदं न मम की भावना ही निष्काम-कर्म की भावना है। इस भावना का अर्थ है-स्वार्थ का त्याग, कामना का त्याग, इच्छा का त्याग तथा दूसरों के लिए जीना-मरना। गीता के अनुसार व्यक्ति की रचना में इन्द्रियां, मन, बुद्धि तथा आत्मा-ये चार तत्व हैं। क्योंकि इन्द्रियों के स्तर पर जीने वाला व्यक्ति किसी न किसी कामना के वशीभूत रहेगा इसलिए वह पूर्णरूप से निष्काम हो ही नहीं सकेगा। पूर्णरूप से निष्काम होने के लिए व्यक्ति को आत्मा के स्तर पर जीना सीखना होगा क्योंकि निष्कामता इन्द्रिय प्रधान नहीं बल्कि आत्म प्रधान है। आत्मप्रधान बनने के लिए ज्ञान की जरूरत है अतः कामना का नाश भी ज्ञान से ही हो सकता है।

आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना का वार्षिकोत्सव 15 नवम्बर 2019 शुक्रवार से 17 नवम्बर 2019 रविवार तक बड़े उत्साहपूर्वक मनाया जा रहा है। 15 एवं 16 नवम्बर को प्रातः 8.00 बजे से 9.40 और रात्रि 7.30 बजे से 9.00 बजे तक होगा। समापन समारोह रविवार 17 नवम्बर 2019 प्रातः 8.30 बजे से 12.30 बजे तक होगा। इस अवसर पर आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान् श्री नरेन्द्र आहूजा जी विवेक पंचकूला के प्रवचन तथा भजनोपदेशिका अन्जलि आर्या जी घरौंडा के मनोहर भजन होंगे। मंगल यज्ञ के ब्रह्मा आर्य समाज के पुरोहित पं. बालकृष्ण जी शास्त्री होंगे। आप सभी परिवार एवं इष्टमित्रों सहित कार्यक्रम में पधार कर धर्म लाभ प्राप्त करें। **-विजय सरीन प्रधान आर्य समाज**

आर्य समाज मंदिर बस्ती गुजां जालन्धर में ऋषि निर्वाण पर हवन यज्ञ

आर्य समाज मंदिर बस्ती गुजां जालन्धर में दीपावली पर्व पर ऋषि निर्वाण दिवस मनाया गया। इस अवसर पर आर्य समाज के सदस्यों ने हवन यज्ञ का आयोजन किया।

आर्य समाज मंदिर बस्ती गुजां जालन्धर में दीपावली पर्व को ऋषि निर्वाण दिवस के रूप में प्रधान श्री सुदेश कुमार की अध्यक्षता में बड़ी श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया गया। मुख्य यजमान श्री विपिन शर्मा एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती कुसुम शर्मा जी बने और यज्ञ के ब्रह्मा श्री देवदत्त जी शास्त्री जी ने हवन यज्ञ सम्पन्न करवाया। इस अवसर पर श्री प्रमोद गर्ग, सरोज गर्ग, गौरव, श्री विद्या सागर, श्रीमती सप्तमी, श्री वरिन्द्र नागपाल, श्री सुमित शर्मा, श्रीमती सुमन शर्मा और श्री अनिल गुप्ता, डाक्टर अजय गुमार, डाक्टर केशव गुप्ता जी विशेष रूप से उपस्थित हुये। प्रो. योगराज शर्मा प्रधान ब्राह्मण सभा और मंत्री श्री रामपाल शर्मा, गोपाल अत्री, सतपाल पप्पू, मास्टर मुनी लाल कश्यप, मोहन लाल बस्सी, डा. अजित भारद्वाज, श्री अरुण हांडा प्रमुख भारत तिब्बत सहयोग, श्री अशोक चड्ढा, श्री जोगिन्द्र, श्री दिनेश भारद्वाज बिट्टू, भगत मनोहर लाल, श्री अश्विनी शर्मा, श्री भावेश शर्मा, निष्ठ दीदी, पवन प्रभाकर, श्री कुन्दरा जी ने यज्ञ में वेद मंत्रों से आहुति डाल कर भारत देश की सुख समृद्धि, एकता और अखंडता की कामना की। आचार्य देवदत्त शास्त्री जी ने दीप माला पर्व और महर्षि दयानन्द जी के निर्वाण दिवस पर बोलते हुये कहा कि दीपावली के पावन पर्व पर हम प्रकाश करने के लिए दीपक जलाते हैं। दीपक की रोशनी से अपने-अपने घरों को जगमगाते हैं परन्तु यह बाहरी प्रकाश तो कुछ समय के लिए है। कुछ समय बाद वो दीपक बुझ जाते हैं और फिर अन्धकार आ जाता है। बाहर का प्रकाश क्षणिक प्रकाश है परन्तु आन्तरिक प्रकाश जीवन भर के लिए है। जिसके हृदय में एक बार ज्ञान की ज्योति प्रज्वलित हो गई उसे कभी नहीं बुझाया जा सकता। उस ज्ञान के प्रकाश से सारे अन्धकार, मिट जाते हैं, सभी बुराईयों का अन्त हो जाता है, सभी कुरीतियां समाप्त हो जाती हैं। इसलिए हमें बाहरी प्रकाश से ज्यादा अपने अन्दर के प्रकाश को महत्व देना चाहिए। दीपावली का पर्व हर वर्ष प्रेरणा देता है कि हम अपने अन्दर ज्ञान का दीपक जलाएं। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने इसीलिए वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म बताया है। इस परम धर्म का पालन करते हुए हम सभी महर्षि दयानन्द के निर्वाण दिवस पर यह संकल्प लें कि हम स्वयं महर्षि दयानन्द द्वारा बताए मार्ग पर चलते हुए, अपने-अपने घरों में वेद की ज्योति को प्रकाशित करते हुए सम्पूर्ण संसार को वेद ज्ञान की ज्योति से प्रकाशित करेंगे। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के ऋण से उऋण होने का यही एकमात्र साधन है। महर्षि दयानन्द जी के निर्वाण दिवस पर अगर हम उन्हें अपनी सच्ची श्रद्धाजंलि भेंट करना चाहते हैं तो हमें वेदों के प्रचार का संकल्प करना होगा। घर-घर में वेद का पवित्र प्रकाश फैलाने के लिए अपने-अपने जीवन का दीप जलाते हुए संसार पर छा जाएं। इस अवसर पर श्री विद्या सागर जी और श्री अनिल गुप्ता जी ने प्रभु भक्ति के गीत गाए। अन्त में ऋषि लंगर का आयोजन किया गया।

सुदेश कुमार प्रधान आर्य समाज

दीपावली का पर्व अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ने का संदेश देता है

आर्य समाज मंदिर शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर में दीपावली एवं ऋषि निर्वाण दिवस के अवसर पर साप्ताहिक यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आर्य समाज के सदस्य हवन यज्ञ करते हुये।

आर्य समाज मंदिर शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर में साप्ताहिक यज्ञ का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य यजमान श्री कुबेर शर्मा एवं श्रीमती नंदिनी शर्मा ने उपस्थित होकर पवित्र पावन वेद की ऋचाओं द्वारा दीपावली एवं महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में आहुतियां डाल कर यज्ञ सम्पन्न किया। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य सुरेश शास्त्री जी ने यजमान परिवार को आशीर्वाद दिया। आर्य समाज की प्रसिद्ध भजन गायिका सोनू भारती ने ईश्वर भक्ति तथा महर्षि दयानन्द को समर्पित मधुर भजन प्रस्तुत किया। श्रीमती सीमा अनमोल तथा उनके बच्चों ने ऋषि दयानन्द जी को श्रद्धांजलि देते हुये सुन्दर भजन सुनाया। मुख्य वक्ता आचार्य सुरेश शास्त्री जी ने कहा कि दीपावली का पर्व अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ने की प्रेरणा देता है। जिस प्रकार हम बाहर का दीपक जला कर अंधकार को दूर करते हैं उसी प्रकार अपने अन्तःकरण में ज्ञान का दीपक जला कर मन के अंधकार को दूर करें। आज का दिन आर्य समाज के लिये और भी महत्वपूर्ण है। क्योंकि आज के दिन आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने हे ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो कह कर अपने प्राणों का त्याग किया था। आज हम सभी ऋषि दयानन्द के बताये मार्ग पर चलने का संकल्प लेकर आर्य समाज की उन्नति के लिये कार्य करें। आर्य समाज के प्रधान श्री रणजीत आर्य ने धन्यवाद करते हुये कहा कि हमें भगवान राम को याद करते हुये उनके पदचिन्हों पर चलने की आवश्यकता है। दीपावली का पर्व हमें भगवान राम की याद दिलाता है। हम ऋषि दयानन्द के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने आर्य समाज की स्थापना करके समाज का सुधार किया। ऋषि दयानन्द के ऋण से उऋण होने के लिये हमें वेद की वाणी तथा यज्ञ की ज्योति को घर घर पहुंचना होगा। मंच का संचालन महामंत्री श्री हर्ष लखनपाल ने सभी को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं दी और सुख समृद्धि की परमात्मा से कामना की। आर्य समाज के वरिष्ठ उप प्रधान श्री सतपाल मल्होत्रा जी ने सभी का धन्यवाद किया। इस अवसर पर ईश्वर चन्द्र रामपाल, सुभाष आर्य, सुदर्शन आर्य, चौधरी हरिश्चन्द्र, सुभाष मेहता, अश्विनी डोगरा, सुरेन्द्र खन्ना, मोहित खन्ना, अशोक कुमार धीर, विजय कुमार चावला, बैजनाथ, रवि आर्या, अनिल मिश्रा, अमित सिंह, अर्चना मिश्रा, उर्मिला भगत, वंशिका अनमोल, तेजस अनमोल, गीतिका अरोडा, संदीप अरोडा, सुनीत भाटिया, डिम्पल भाटिया, स्वर्ण शर्मा, इन्द आर्या, दिव्या आर्या, अनु आर्या, उर्मिला शर्मा, वेद कुमार भाटिया, श्रीमती जगदीश भाटिया, सुनील मिश्रा, राजीव शर्मा, परवीन शर्मा, रानी अरोडा, दिविता अरोडा, रजनी अरोडा ज्योति सिंह, रविन्द्र आर्य इसके अतिरिक्त बहुत से नगर निवासियों ने भाग लिया।

रणजीत आर्य प्रधान आर्य समाज

स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की तरफ से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक प्रेम भारद्वाज द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर पंजाब से मुद्रित एवं गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से प्रकाशित। सम्पादक-प्रेम भारद्वाज
पीआरबी एक्ट के तहत प्रकाशित सामग्री के चयन हेतु उत्तरदायी किसी विवाद का न्यायिक क्षेत्र जालन्धर होगा। आर एन आई संख्या 26281/74 **E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org**